metadata, citation and similar papers at core.ac.uk
brought to you by CORE
provided by CMFRI Digital Repository

उत्तर तमिलनाडु के कूटल्लूर, पष़यार और कावेरिपट्टणम से तारली की भारी पकड

हाल के वर्षों में तमिलनाडु के समुद्र से शोषित करनेवाली प्रमुख मात्स्यिकी संपदा है, *सारडिनेल्ला लोंगिसेप्स* जाति की भारतीय तारली। पिछले पाँच वर्षो के दौरान तारली की पकड में विचारणीय वृद्धि हुई है। वर्ष 1985 को यहाँ से मिली वार्षिक पकड 4,270 टन थी तो 1990 तक आते आते यह 37,751 टन हो गई। वर्ष 1990 के आँकडों के अनुसार कुल पकड का 11.8% तारली थी। पकड का अधिकांश भाग चेंगलपेट, साऊथ आरकोट जिला से प्राप्त हुआ था। रिपोर्टों के अनुसार तारली की पकड का प्रमुख भाग तमिलनाडु के उत्तरी जिलाओं से प्राप्त हुआ था। यह इस प्रांत के कुल तारली उत्पादन का 60% आँका गया है।

तारलियों को पकडने केलिए सब से अनुयोज्य जाल बैग-नेट (इडा-वलै) देखा गया था। इसके अतिरिक्त कावाला वलै और तट्टकावाला वलै का भी उपयोग यानों के ज़रिए किया था। कूडल्लूर और पष़यार के मात्स्यिकी बंदरगाहो में इडा-वलै के ज़रिए 1989-90 के दौरान भारी मात्रा में तारली की पकड हुई थी। मई-जून के दौरान 110-114 मि मी की तरुण तारली अधिक थी तो सितंबर से 165-169 मि मी की बडी तारली मिली थी। बाकी महीनों में मिली तारली 140-159 मि मी आकार की थी।

यद्यपि तारली अधिक मात्रा में यहाँ से पकडी गई तथापि मछुओं को इस से कम फायदा हुआ था क्योंकि तमिलनाडु में तारली पसंद की मीन न होने के कारण दाम बहुत कम मिला था। सिर्फ बडी तारलियों का विपणन बाहर के मार्केटो में किया था, बाकी फाक्टरीवालों को सूखने के बाद बेचा गया था।

रिपोर्टर

पी.के. महादेवन पिल्लै
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, मद्रास अनुसंधान केन्द्र, तमिलनाटु
एस. राधाकृष्ण और एस. मणिवासगम
केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कूटल्लूर क्षेत्र केन्द्र, तमिलनाटु